ऐतिहासिक महत्व का गंतव्य बनाती है। श्रद्धेय पवित्र स्थानों से लेकर मनोरम आकर्षणों तक, जिला आगंतुकों और निवासियों के लिए एक संपन्न केंद्र बनने का वादा करता है। महोदय, सरकार को अपने प्रयासों को हापुड़ जिले को सर्वांगीण विकास की ओर ले जाने की आवश्यकता है। यह जरूरी है कि हम गढ़मुक्तेश्वर को हरिद्वार और वाराणसी की तरह एक पवित्र शहर के रूप में विकसित करने जैसी पहल को प्राथमिकता दें। इस साल गढ़मुक्तेश्वर में कार्तिक पूर्णिमा मेले के दौरान 35 लाख से ज्यादा लोगों ने गंगा स्नान किया। एक नए तीर्थ स्थल के रूप में बृजघाट के उभरते महत्व को पहचानते हुए इसे एक जीवंत पर्यटन स्थल में बदलने की महत्वपूर्ण आवश्यकता है। वाराणसी में नियोजित एमवी गंगा विलास से प्रेरणा लेते हुए, बृजघाट में गंगा नदी पर क्रूज़ सेवाएं शुरू करने की आवश्यकता है। यह पहल न केवल आध्यात्मिक जरूरतों को पूरा करेगी, बल्कि क्षेत्र के सांस्कृतिक और आर्थिक विकास को भी बढ़ावा देगी।

महोदय, मैं सरकार से हापुड़ जिले को एक पवित्र शहर के रूप में विकसित करने को प्राथमिकता देने और इसमें तेजी लाने का आग्रह करती हूं।

Infirmities in issuance of Ayushman Card

श्री विजय पाल सिंह तोमर (उत्तर प्रदेश) : महोदय, भारत सरकार की आरोग्य योजना के तहत 12 करोड़ आयुष्मान काड्र्स लाभार्थियों को दिए जा चुके हैं। इस योजना के अंतर्गत 5 लाख रुपए तक के मुफ्त इलाज की सुविधा मिलती है, जिससे वह देश के किसी भी हिस्से में अपना मुफ्त इलाज करवा सकता है। "विकसित भारत संकल्प यात्रा" के दौरान मुझे जानकारी मिली थी कि भारत सरकार की आयुष्मान योजना में 6 या 6 से अधिक सदस्य वाले राशन कार्डधारी परिवार अपने घर पर ही मोबाइल से आयुष्मान कार्ड बना सकते हैं, लेकिन 6 सदस्यों से कम संख्या वाले परिवारों के काड्र्स नहीं बन पा रहे हैं। मेरे विचार से यह योजना उन परिवारों के लिए नुकसानदेह है, जिन्होंने सरकार की परिवार नियोजन नीति का पालन किया है, क्योंकि उनके परिवार में सदस्यों की संख्या 6 से कम है।

अतः मेरा आग्रह है कि इस योजना में अविलंब परिवर्तन करके 6 से कम सदस्यों वाले राशन कार्डधारी परिवारों को आयुष्मान योजना का लाभ प्राथमिकता के आधार पर मिलना चाहिए, ताकि केन्द्र की परिवार नियोजन नीति का पालन करने वालों को लाभ मिल सके तथा इस नीति का पालन करने वालों को हतोत्साहित न होना पड़े।

Demand for teaching of Sanskrit in Schools and Colleges in systematic manner

डा. कल्पना सैनी (उत्तराखंड): महोदय, संस्कृत भारत की प्राचीनतम भाषा है। विश्व साहित्य में संस्कृत भाषा में सृजित एवं समाहित साहित्य अपनी प्राचीनता, दिव्यता, महानता और अनुपमता के कारण विश्व-वन्दनीय एवं विश्व-विश्रुत हैं। सम्पूर्ण वैदिक साहित्य का दिव्यतम स्वरूप संस्कृत भाषा में संग्रथित, सन्निहित एवं समाश्रित हो रहा है। विश्व साहित्य और सृष्टि के सर्गकाल की सनातन वैदिक वाणी चतुर्वेदों में अपनी परम दिव्यता के साथ परिलक्षित हो रही है। ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद की ईश्वरीय सनातन वैदिक दिव्य वाणी वैदिक संस्कृत में